2. 'जनांकिकी की पिता' किसे कहा जाता है?

(क) जॉन ग्रांट (ख) जॉन अब्राहम (ग) बर्कले (घ) हम्बोल्ट

3. जनसंख्य के साथ सतत विकास पर बल देनेवाला काहिरा सम्मेलन किस वर्ष हुआ था?

(क) 1980 (ख) 1974 (ग) 1994 (घ) 1984

4. जनांकिकी जनसंख्या संबंधी तत्वों का ..... अध्ययन करता है।

(क) व्यक्तिगत (ख) संस्थागत (ग) वैश्विक (घ) जैविकीय

5. इनमें से कौन जनांकिकीय वेत्ता नहीं है?

(क) मूर (ख) स्पेंगलर (ग) डेविस (घ) राइडर

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. जनसंख्या एवं भूगोल के बीच के संबंधों का समीक्षात्मक वर्णन प्रस्तत कीजिए।

   Present a critical explanation of the relationship between population and geography.

2. ''जनसंख्या जनांकिकी विज्ञान का रूप ले चुका है'' स्पष्ट कीजिए।

   Population has attained the form of Demography. Explain.

3. जनसंख्या भूगोल एवं जनांकिकी के बीच के संबंधों का विवरण दीजिए।

   Give an account of the relationship between population geography and demography.

2.6 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

1. हीरालाल : जनसंख्या भूगोल
2. चन्दना : जनसंख्या भूगोल
3. माजिद हुसैन : जनसंख्या भूगोल

●●●

इकाई-1

जनसंख्या वृद्धि की वर्तमान प्रवृत्ति : विकसित एवं विकासशील देशों के संदर्भ में

पाठ - 3

(Recent Trend of Population Growth with Reference to Developed & Developing Countries)

पाठ-संरचना (Lesson Structures)

3.0 उद्देश्य (objective)

3.1 परिचय (Introduction)

3.2 विश्व में जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति (Trends of Population Growth in the World)

3.3 विकसित एवं विकासशील देशों में जनसंख्या वृद्धि प्रवृत्ति (Trends of Population Growth in Developed and Developing Countries)

3.4 सारांश (Summing-Up)

3.5 मॉडल प्रश्न (Model Questions)

3.6 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

3.0 उद्देश्य (Objective)

जनसंख्या में वृद्धि एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है परंतु विकसित एवं विकासशील देशों की सामाजिक आर्थिक व्यवस्था में अंतर के कारण यहाँ जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति में पर्याप्त अंतर पाया जाता है अत: इस पाठ का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को विकसित एवं विकासशील देशों के संदर्भ में जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति तथा इसके कारण एवं परिणामों से अवगत कराना है।

3.1 परिचय (Introduction)

विश्व की जनसंख्या वृद्धि की गति तीव्र है तथा विस्फोटक भी। जनांकिकीय संक्रमण सिद्धांत के अनुसार यदि जनसंख्या वृद्धि की वार्षिक गति 2% से अधिक होती है तब उसे विस्फोटक स्थिति माना जाता है।

3.2 विश्व में जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति (Trends of Population Growth in the World)

जनसंख्या की औसत वृद्धि गति लगभग 2% वार्षिक है। जबकि विकासशील देशों में जहाँ विश्व की 75% के आसपास आबादी रहती है, वहाँ इनकी वृद्धि गति 2% से अधिक है। इसका अर्थ यह है कि विश्व की 3/4 जनसंख्या सही मायनों में विस्फोटक गति से बढ़ी रही है। संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कार्यक्रम के अनुसार विश्व में प्रतिदिन लगभग 2,20,000 बच्चें जन्म ले रहे है। जिससे एक वर्ष में औसतन 88-91 मिलियन तक जनसंख्या में वृद्धि हो रही है। जनसंख्या में इस अभूतपूर्व वृद्धि के कारण न केवल जीवन स्तर में ह्रास की प्रवृति है बल्कि पृथ्व की सीमित संसाधनों पर भी अभूतपूर्व दबाव है। विश्व जनसंख्या में वृद्धि के आँकड़ों के कई निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं।

वर्ष	विश्व जनसंख्या (करोड़ में)	वृद्धि (करोड़ में)	वर्ष
1650	50		
1950	250	200	300
1982	450	200	32
1987	500	50	5
1992	548	48	10
1994	567	19	2
1997	600	100	10
2012	800 (अनुमानित)	200	15

इन आँकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि विश्व स्तर पर जनसंख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि में काफी कम समय लग रहा है। 50 करोड़ से 250 करोड जनसंख्या होने में लगभग 300 वर्ष लगे। जबकि 32 वर्ष का समय (1950-1982) लगा। इसी तरह 450 से 500 करोड़ होने में मात्र 5 वर्ष का समय लगा है। जबकि 500 करोड़ से 600 करोड़ विश्व की जनसंख्या होने में मात्र 10 वर्ष का समय लगा। अर्थात आरंभ में जहाँ 200 करोड़ जनसंख्या वृद्धि में 300 वर्ष लगे वही अब 100 करोड़ की आबादी की वृद्धि में मात्र 10 वर्ष लगे। यही नहीं यह भी अनुमानित है कि 600 से 800 करोड़ यानि 200 करोड़ की अगली आबादी मात्र 15 वर्षों में (2012 तक अनुमानित) हो जाएगी।

आँकड़ों के विश्लेषण से यह पता चलता है कि विश्व की जनसंख्या विस्फोटक गति से बढ़ रही है। 2025 ई० तक विश्व की जनसंख्या 847 करोड़ हो जाएगी जबकि विकसित देशों की जनसंख्या वृद्धि गति विकासशील देशों की अपेक्षा कम है। तथा विकासशील देशों में जनसंख्या नियंत्रण के लिए अनेक कार्यक्रम व्यापक स्तर पर चलाए जा रहे हैं।

कुछ प्रादेशिक आँकड़ों के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि जनसंख्या नियंत्रण कार्यक्रमों के बावजूद विश्व के अधिकतर क्षेत्रों में वृद्धि की गति तीव्र रहने की संभावना है। 1994 ई० के आँकड़ों के आधार पर 2025 ई० के लिए प्रक्षेपित जनसंख्या का विवरण कुछ इस प्रकार है–

देश	1994 ई०	2025 ई०	वृद्धि
	(करोड़ में)		
1. अधिक विकसित देश	123.8	140.3	17
2. कम विकसित देश	442.8	706.9	264
3. दक्षिण एशिया	124.4	213.6	89
4. भारत	89.7	139.9	50
5. चीन	120.5	154.0	33.5

रहने की आशंक है। साथ ही विश्व विकास रिपोर्ट 1991 के अनुसार प्रादेशिक स्तर पर पूर्वी एशिया, दक्षिण एशिया, मध्य पूर्व, लैटिन अमेरिका तथा यूरोप, उत्तरी अफ्रीका में जनसंख्या वृद्धि दर 1.5 से लेकर 2.5% तक रहने की उम्मीद है यानि विश्व की वास्तविक जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ प्रतिशत वृद्धि में भी तीव्रता यथावत् रूप से कायम है। परिणामस्वरूप विश्व स्तर पर जनसंख्या में विस्फोटक वृद्धि जारी है।

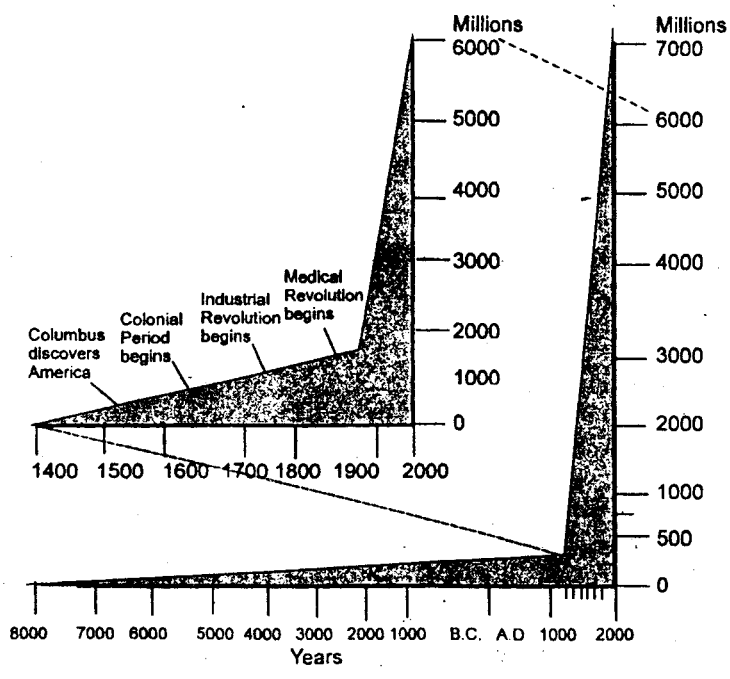

चित्र 2.1 : विश्व जनसंख्या वृद्धि

इस रेखाचित्र से यह स्पष्ट होता है कि पिछली एक सदी के दौरान विश्व जनसंख्या में चिंताजनक वृद्धि अंकित हुई है। लेकिन इस वृद्धि की प्रादेशिक विशेषताएँ भी हैं। विकसित और विकासशील देशों की जनसंख्या वृद्धि गति में भारी विषमताएँ है। 1980-87 के औसत रिपोर्ट के आधार पर विश्व जनसंख्या की वृद्धि दर 1.74% थी। यह विकासशील देशों में 2.21% तथा विकसित देशों में मात्र 0.67% था। वास्तविकता आज भी यही है कि कई विकसित देशों की जनसंख्या वृद्धि में स्थायित्व आ चुका है। यहाँ तक कि इनमें ऋणात्मक वृद्धि की प्रवृति भी आरंभ हो गई है।

3.3 विकसित एवं विकासशील देशों में जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति (Trends of Population Growth in Developed and Developing Countries)

इस पृथ्वी पर मानव लगभग दस लाख वर्षों से रह रहा है। परंतु इसकी संख्या 20 वीं शताब्दी में विस्फोटक गति से बढ़ी है। 1950 ई० के बाद विश्व की जनसंख्य में भारी वृद्धि हो रही है। इस अर्द्ध शताब्दी में जनसंख्या की औसत वार्षिक वृद्धि दर 1.8–2.1% के बीच रही है। जो पिछली सभी वृद्धि दरों से अधिक है। इस अप्रत्याशित उच्च वृद्धि दर का कारण इस अवधि में विकासशील देशों में मृत्यु दरों में तेजी से हुआ ह्रास है जबकि उच्च जन्म दर पर अभ भी प्रभावकारी नियंत्रण स्थापित नहीं किया जा सका है। यही नहीं अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के अल्पविकसित देशों में 1950 से जनसंख्या की वार्षिक वृद्धि दर अति उच्च यानि 3% से भी अधिक तथा दक्षिण एशिया के देशों में उच्च यानि 2.5-3% रही है। दक्षिणी एशियाई देशों की जनसंख्या अधिक होने के कारण यहाँ जनसंख्या वृद्धि अधिक है।

20 वीं सदी में जनसंख्या वृद्धि दर (विश्व)

वर्ष	वार्षिक वृद्धि दर (% में)	विकसित देशों की वृद्धि दर (% में)	विकासशील देशों की वृद्धि दर (% में)
1910	0.6	1.1	0.4
1950	1.0	0.3	1.3
1960	2.0	1.4	2.1
1970	2.1	1.1	2.1
1980	2.0	1.0	2.3
1990	1.9	1.1	2.1
2000	1.7	1.0	2.0

इन आँकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि विश्व स्तर पर जनसंख्या में वार्षिक वृद्धि की औसत दर

अधिकतम 1970 ई० में 2.1% रही है 20 वीं सदी के दौरान विकसित देशों में सर्वाधिक वार्षिक वृद्धि की दर 1960 में 1.4% दर्ज की गई जबकि विकासशील देशों में यह 1980 ई० में 2.3% दर्ज किया गया। ये आँकड़े बताते है कि पिछली सदी के दौरान विकसित देशों में जनसंख्या की वार्षिक वृद्धि दर 1940 के बाद से विश्व औसत से लगातार कम रही है, जबकि विकासशील देशों में यह लगातार ज्यादा ही रही है।

विश्व स्तर पर जनसंख्या में वृद्धि की गति तीव्र है जो विकसित और विकासशील देशों में दो बच्चों के जन्म के अंतराल से अधिक स्पष्ट है।

क्षेत्र	दो बच्चों के जन्म के मध्य की अवधि (सेकेंड में)
एशिया	0.4
सहारा-अफ्रीका	1.4
लैटिन अमेरिका	2.3
पूर्व एवं उत्तर अफ्रीका	3.6
यूरोप	5.2
उत्तर अमेरिका	7.6
ओसेनिया	60.0
विश्व	0.2

यहाँ आँकड़ा यह दर्शाता है कि विश्व से स्तर पर दो बच्चों के जन्म के मध्य औसतन 0.2 सैकेंड का समय लगता है। सबसे कम समय एशिया में 0.4 सेकेंड तथा सर्वाधिक 60 सेकेंड था। एक मिनट ओसेनिया में लगता है। इससे यह निष्कर्ष निकालना संभव है कि एशिया, के बाद अफ्रीका, लैटिन अमेरिका, अफ्रीका, यूरोप, उत्तर अमेरिका में क्रमशः दो बच्चों के जन्म के मध्य लगनेवाला समय तुलनात्मक रूप से अधिक है। यही कारण है कि एशियाई क्षेत्र में जनसंख्या अधिक है। जबकि कई यूरोपीय देशों में ऋणात्मक वृद्धि की स्थिति है। 1750 ई० में विकसित देशों के पास विश्व की 21.6% जनसंख्या थी जो 1900 ई० में 31.4% हो गया था। परंतु 1950 ई० के बाद इसमें कमी की प्रवृत्ति जारी है।

विकसित देशों में जनसंख्या वृद्धि की निम्न स्थिति कई भौगोलिक कारकों का परिणाम है। इसमें सामाजिक-आर्थिक विकास सर्वाधिक महत्व वाला कारक है। विकसित देशों खासकर पश्चिमी यूरोप में भी कभी भारत जैसी ही विस्फोटक स्थिति थी। परंतु यहाँ सामाजिक-आर्थिक विकास एवं आधुनिकीकरण